टी. बी. की 1, 2, 3

टी.बी. का मरीज बीमारी को फैलने से कैसे रोके?

1. ज्यादा से ज्यादा समय बाहर ताजी हवा में रहो– जैसे खुले में, पार्क में, छत पर, खेत में, आंगन में या किसी पेड़ के नीचे। अगर मौसम सही है तो रात को भी बाहर सो जाओ।
2. खाँसी करते समय मुंह पर रूमाल रखो।
3. बंद कमरे में न रहो। भीड़–भाड़ से दूर रहो। इधर–उधर कभी मत थूको।
4. छोटे बच्चों को गोद में उठाना, चूमना या साथ सुलाना उचित नहीं है।
5. नशे से दूर रहो जैसे बीड़ी, सिगरेट, गुटका, तम्बाकू व शराब इत्यादी।
6. अच्छा सन्तुलित खाना खाओ जैसे–दूध, हरी सब्जी, दाले व फल आदि।
7. टी0बी0 का इलाज है। दवाई नियम से 6 से 8 महीने खानी चाहिए।
8. महीने, दो महीने के इलाज से ही काफी आराम आ जाता है। लेकिन इलाज पूरा करो– 6 से 8 महीने। बीच में कभी न छोड़ो।
9. इलाज के हर 2 महीने होने पर बलगम की जांच करवाओ।

सावधानी बरतने की सबसे अधिक आवश्यकता फेफड़े के उन टी. बी. रोगियो को है, जिनकी बलगम में कीटाणु जा रहे हैं यानी जो स्पूटम पॉजिटिव हैं। फेफड़े के कुछेक मरीज जिनकी बलगम में कीटाणु जाएं बीमारी फेलाते हैं।

फेफड़े को छोड़ जब टीबी दूसरे अंगों में होती है तो यह एक से दूसरे को नही फैलती। यानि हड्डी, जोड़, गुर्दा, गाँठ, दिमाग, जिगर, आतड़ी या पेट इत्यादी की टी.बी. के मरीज दूसरों में संक्रमण नहीं करते।

डा. रमन कक्कड़

पुस्तक का विमोचन बी.के. अस्पताल फरीदाबाद में टी.बी. विभाग के स्वाथ्य कर्मियों की पूरी टीम की उपस्थिति में श्रीमति शशी बाला टी.बी. एच.वी. के द्वारा 14 अप्रैल 2014 को किया गया क्योंकि सयोंगवश उसी दिन उनका जन्मदिन था।

Concept, Compiled, Edited & Published by: Dr. Raman Kakar

Designed By : **Pawan Baghel**

Printed By : JACK OFFSET WORKS | 668A, Gali No. 82, Sanjay Colony, Sector-23, Faridabad **M : 9871099111**

Ik<+ d j iLr d okfi l d j!

चलता फिरता संसार

डा0 रमन कक्कड़
सम्पादक
(टी.बी. स्पेशिलस्ट)
बी.के. अस्पताल, फरीदाबाद

"डा0 साहब, मेरा बेटा चल नहीं सकता। कृपया उसे बाहर ही जाँच कर लीजिये। " एक गरीब से व्यक्ति ने बड़ी शालीनता से आग्रह किया। मैंने स्टैथो (आला) उठाया और उसके पीछे–पीछे चल दिया। वह मुझे काफी दूर ले गया। सड़क के किनारे पर माल ढोने वाला एक सपाट रिक्शा खड़ा था। उसमें उसका 15 साल का बेटा रजाई बिछाकर लेटा पड़ा था । साथ ही कम्बल में सिमटी हुई उसकी माँ बैठी थी और बड़ी उम्मीद से मेरी ओर देख रही थी।

उस लड़के को टी.बी. थी। उसके गले के साइड में कई गांठें सूज गई थी। जिनमें सूई डालकर पानी निकाल जाँच की गई थी (यानि FNAC)। उसमें टी.बी. घोषित की गई थी। गाँठों की टी.बी. से दूसरों को संक्रमण नहीं होता। उस लड़के की हालत काफी गंभीर थी। उसे जोर से बुखार था। वह बेहद कमजोर था। पिछले 3 महीने से बीमारी ने घेर रखा था। इकलौते बेटे को लेकर माँ–बाप दर–दर भटक रहे थे। रिक्शा में कोने पर पड़े एक थैले में से उसने 3–4 एक्सरे व बहुत सी रिपोर्टें निकाल कर मुझे दीं। फरीदाबाद के विभिन्न अस्पतालों की पर्चियाँ थी। "आज सुबह हम बल्लभगढ़ के एक प्राइवेट अस्पताल से जबरदस्ती छुट्टी करा कर सीधे आपके पास आए हैं"। मैंने हिसाब लगाया – यानि 15 किलोमीटर दूर से रिक्सा पर आये थे। उस मरीज को देखते हुए मेरा ध्यान बार–2 भटक जाता और उनके रिक्शे पर अटक रहा था। रिक्शे के एक कोने में प्लास्टिक की एक बड़ी बोतल में पानी था। पास में गिलास, थाली व दो तीन बर्तन नजर आ रहे थे। पॉलीथीन की दूसरी थैली में कुछ केले तथा 4–5 मोटी–मोटी रोटियाँ झलक रही थी। झोले में कुछेक कपड़े, साबुन व दो–एक बिस्कुट के पैकेट थे। वहीं एक मोमबत्ती, माचिस व ऑडोमोस की टयूब भी पड़ी थी। एक कोने में एक तरपाल रस्सी से बंधी पड़ी थी। जाहिर है, वर्षा व धूप का भी प्रबन्ध था ।

उन तीनों के तन मन धन की स्थिति भाँप कर मैं काफी आश्चर्य चकित था। जैसे श्रवण कुमार अपने अंधे माँ–बाप को लेकर तीर्थ यात्रा पर निकला था। ठीक वैसे ही यह रिक्शा चालक अपनी बीवी और बेटे को लेकर महीनों से टी.बी. से संघर्ष कर रहा था। रिक्शे के तीन पहियों पर ही इन तीनों का चलता फिरता छोटा सा संसार बसा हुआ था। "बस मेरा फूल सा बच्चा ठीक हो जाए डा0 साहब" वो बार–बार कह रहा था। खैर हमने उसका टी.बी का इलाज शुरु किया। ऐसे दृढ़ निश्चय व हिम्मत के सामने टी.बी. रोग भला कैसे टिक पाता। उसका बेटा 2 महीने में काफी भला चंगा हो गया। अब बेटा खुद मम्मी पापा को बिठाकर रिक्शा चलाकर मेरे पास लाता था–जाँच के लिये। उसने लगकर पूरे 6 महीने सहीं ढंग से दवा खाई और स्वस्थ हो गया। आजकल उनकी अपनी किरयाने की दुकान है।

तीन देवियाँ

शशि बाला
टी.बी.एच.वी., सिविल डिस्पेंसरी
ओल्ड फरीदाबाद

मनोज की हालत कुछ ज्यादा ही बिगडी हुई थी। गलत–शलत प्राइवेट डाक्टरों के चक्कर में बहुत टाईम व रूपया खराब कर चुका था। बलगम की जांच में कीटाणु थे यानि संक्रमण वाली टी.बी. थी।

हाल ही में उसका इलाज टी.बी. नम्बर 373/08 के अंतर्गत हमारे ओल्ड फरीदाबाद के अस्पताल में चलाया गया था। एक दिन जब मैं रूटीन विजिट पर उसके घर पहुंची तो देखा वह एक तंग सी गली में अपने किराये के छोट से घुटन भरे कमरे में लेटा हुआ था, न कोई खिडकी न कोई रोशनदान। मैंने उसे उठने को कहा। उसको लेकर फौरन उसकी छत पर चली आई – खुले में। वहाँ बैठाकर मैंने उसको समझाया कि बन्द कमरे में रहने से तुम्हारी खाँसी के कीटाणु तुम्हारे बच्चों को संक्रमित कर देंगें। वो भी बीमार पड़ जाएंगे। अतः तुम अपनी चारपाई यहाँ ऊपर ले आओ खुली हवा में। यहीं छत पर डेरा डालो कुछ दिन के लिये। जब तक बलगम की रिपोर्ट में कीटाणु साफ नहीं हो जाते। मनोज की बलगम की 3 प्लस रिपोर्ट आए हुए 20 दिन हो चुके थे। अभी तक किसी डा0 या स्वास्थ्य कर्मचारी ने इसे इतना भी समझाने का कष्ट नहीं किया था? यह कदम तो इसके इलाज का एक मूलभूत हिस्सा है। मैं यह सोचकर सिहर उठी कि कहीं पहले ही मनोज अपने बच्चों को टी.बी. का उपहार दे तो नहीं चुका? कहीं मुझे आने में देर तो नहीं हो चुकी? इसी सोच विचार में उलझे हुए मैंने पूछा , " मनोज तुम्हारे बच्चे कितने हैं।''

वह बोला – ''एक बेटा और तीन देवियाँ।"

उसकी पत्नी बोली, "इन्हें अपनी तीन बेटियों से बहुत प्यार है। बेटी तो देवी समान होती ही हैं। इनको एक मिनट भी अपने से दूर नहीं करते जी ये। स्कूल से आते ही चारों बच्चे इनको चिपट जाते हैं। बस आते ही ये चारों को होमवर्क करायेंगें। हमारा एक ही सपना है चारों बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलवाना।"

मैंने उससे कहा, "उन चारों बच्चों को स्कूली शिक्षा के बजाए एक दूसरी शिक्षा की कहीं ज्यादा जरुरत है, आज।'' उसने कहा, "जी? हम समझे नहीं।" मैंने कहा, "तुम्हारे परिवार के लिये हिन्दी, अंग्रेजी या गणित से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण एक दूसरा विषय है – टी.बी. रोगी क्या उपाय करे कि उसके बच्चों में बीमारी के बीज न पड़ने पाऐं।" मीयाँ बीवी अवाक से खड़े रहे जैसे मेरी बात को समझने की कोशिश कर रहे हों। मैंने सख्ती से बोला कि, "फिलहाल तो 2 महीने उनसे उचित दूरी बनाकर रखो। उनको इस बिमारी से बचाओ।"

मनोज बोला, "जी! जैसा आप कहोगे वैसा ही करुँगा । मुझे बहुत चिंता है। 3–3 बेटियों का बोझ है मेरे ऊपर।"

मुझे उसपर बहुत तरस आया लेकिन टी.बी. के कीटाणु को नहीं। दिनांक 4–8–2008 को मनोज चल बसा। मनोज के जाने के कुछ दिनों बाद उसकी बेटी नेहा का इलाज टी.बी. नम्बर 890/08 शुरू हो गया। फिर अगले वर्ष 7 साल की अंजली ने भी हमारे विभाग में दस्तक दी। टीबी नम्बर 59/10 के तहत उसका भी इलाज किया।

दिनांक 26–6–2011 को मनोज की छोटी बेटी गुंजन की दवा के डिब्बे पर भारी मन से मुझे टीबी नम्बर 984/11 लिखना पड़ा। इतना ही नहीं अभी पिछले महीने गुँजन का दूसरी पारी का इलाज टीबी नम्बर 326/12 के तहत चलाया गया है।

हे भगवान ! यह सिलसिला कब थमेगा !

दो जन्मदिन

egUæ
Vh-ch-,p-oh-] ch-d-
vLirky] Qjhnkckn

बात दो साल पुरानी है। पहली बार जब मनोज मेरे पास अस्पताल में आया था तो उसकी हालत बहुत गंभीर थी। वह अकेला कोने में बैठा बेहद निराश था तथा रो रहा था – "मैं इस शहर में बिल्कुल अकेला हूँ। माँ–बाप गाँव में हैं।" वह बोला, "बुखार ही नहीं टूट रहा–4 महीने हो चले। कई डॉक्टरों से इलाज करा चुका हूँ। भूख मर गई है। कमजोर हो गया हूँ। सूखता जा रहा हूँ। खाँसी भी परेशान कर रही है।" मैंने देखा बेचारा दो कदम चलने में भी लाचार था।

"लम्बी खाँसी, लम्बा बुखार, वज़न घटता जाये लगातार, तो टी.बी. का शक करना मेरे यार " ये लाइनें उस पर ऐन फिट बैठ रही थी। सो मैंने उसका छाती का एक्सरे व बलगम की जाँच करवा दी। डा0 साहब ने फौरन टी.बी. घोषित कर दी और मैंने उसी दिन उसका इलाज चालू करवा दिया। उसे काफी देर तक बैठाकर तसल्ली भी दी व आशा बंधाई। उसने लगकर सही ढँग से पूरा इलाज किया तथा 6 महीने में एकदम तंदुरुस्त हो गया। मुझे बहुत खुशी हुई। जाते हुए अपना मोबाइल नं0 मेरे मोबाइल में खुद फीड करके बोला "नीलम चौक पर मैं टैक्सी चलाता हूँ, कभी आइयेगा।"

पिछले दिनों यू.पी. में दंगे हो रहे थे। कोई टैक्सी उस रुट पर जाने को तैयार नहीं थी और मुझे सपरिवार हरिद्वार पहुँचना था। हारकर मैंने मनोज को फोन मिलाया।

मेरे फोन करते ही मनोज अपनी टैक्सी लेकर आ गया और मुझे सपरिवार लेकर हरिद्वार चल दिया। और अगले दिन सकुशल वापिस ले आया। शुक्र है दंगों की आंच हमारे रुट पर नहीं पड़ी। मैंने मनोज से पूछा, "जब आपको पता था कि यू.पी. में दंगे चल रहे हैं तो आप जाने के लिए राजी कैसे हो गये ?" मनोज ठहाका मारकर हँस पड़ा और बोला कि जिस दिन आपने मेरी बीमारी को पहचान कर मेरा सही इलाज शुरु किया था, उस दिन को आज भी मैं प्रतिवर्ष दूसरे जन्म दिन की तरह मनाता हूँ। मैं तो मर ही जाता, अगर उस दिन आप ना मिले होते। मेरा यह दूसरा जीवन तो आपका ही दिया हुआ है। इस पर आपका पूरा हक है।" यह कहकर मनोज बिना एक भी पैसा स्वीकार किये चला गया।

दो हंसों का जोड़ा

रेखा रानी
टी.बी.एच.वी.

काम करते–2 मेरी नजर खिड़की के बाहर सामने पार्क में एक हंसती–खेलती जोड़ी पर पड़ी । लड़का–लड़की दोनों ने सुंदर–2 कपड़े पहने हुए थे । लगता था इस दंपति की नई–नई शादी हुई थी। सामने चमचमाती बाइक भी खड़ी थी । रह–रहकर वो दोनों खिलखिलाकर हँस पड़ते और मेरा ध्यान अपने काम से हटकर उनकी तरफ चला जाता । मैंने सोचा टाईम पास करने के लिए इन दोनों को जच्चा–बच्चा केन्द्र के प्रांगण के अलावा कोई और जगह नहीं मिली थी, फिर मैं काम में व्यस्त हो गई थी ।

दोपहर को वो दोनों हंसी मजाक करते–2 मेरे कमरे में आ गए । लड़की ने कहा, "नमस्ते दीदी, ये मेरे पति का कार्ड ।" मैं चौंक गई, क्योंकि उस लड़के की बलगम की रिपोर्ट में 3 प्लस टी.बी. के कीटाणु थे । देखने में तो काफी ह्रष्ट–पुष्ट और स्मार्ट दिखता था । लड़की भी बहुत सुंदर थी । खैर, मैं उठी और दोनों को बाहर वहीं उनकी बाइक के पास बैंच तक ले आई और उनको टी.बी. की सावधानियाँ अच्छी तरह से समझाई । मुझे महसूस हुआ कि बीच–2 में वो शरारत भरी निगाहों से एक दूसरे को निहारते तथा मुस्कुरा देते थे । मेरी हिदायतों की तरफ कोई खास ध्यान नहीं दे रहे थे ।

अगले दिन जब मैं उनके कमरे पर गई तो वही लापरवाही – ना मुँह पे रुमाल, ना आपस में कोई परहेज और कमरे की सब खिडकियाँ इत्यादि बन्द । मैंने दोबारा उनको सावधानियाँ समझाईं । लेकिन उन दोनों की चंचलता जारी रही । बाद में मैं सोचती रही कितना खुश है ये दो हंसों का जोड़ा ।

गिरधारी का टी.बी. नं0 1449/10 के तहत ईलाज हुआ । वो ठीक भी हुआ लेकिन लापरवाहियों के चलते दोबारा 684/11 तथा फिर तिबारा 716/13 के अंतर्गत मैं उसका इलाज करती चली गई । इसी दौरान सुशीला भी बीमार पड़ी (799/11) । लगातार बीमारी के थपेड़ों ने उनकी चंचलता पर रत्ती भर भी असर नहीं डाला, हाँ चेहरों की चमक दमक सुन्दरता अब वैसी ना रह पाई थी ।

अभी कुछ दिन पहले डॉ0 साहब ने मुझे एक बेहद सीरियस मरीज का दिल्ली के बड़े अस्पताल के लिए रेफर फार्म बनाने को कहा । वो मरीज सूखकर कांटा हो चुका था । बेहद कमजोर बैठा कराह रहा था । मुझसे उसकी हालत देखी न जा रही थी । उसका कराहना बर्दाश्त न हो रहा था। मैंने उसका रेफर फार्म, एक्स–रे तथा दूसरे जरुरी कागजात तैयार किए तथा उसके बगल में रखे। ताकि जैसे भी हो ये मरीज जल्द से जल्द यहाँ से चला जाए । लेकिन काफी देर हो गई । उसकी पत्नी जो सवारी का प्रबन्ध करने गई थी, आ ही नहीं रही थी । मेरी उलझन बढ़ती जा रही थी । इतने में वो आ गई । मैं उसे देखकर हैरान रह गई, अरे ये तो सुशीला है । ध्यान से देखा तो गिरधारी को पहचान पाई।

कुछ दिन के बाद सुशीला का फोन आया, "दीदी वो नहीं रहे, कह रहे थे दीदी को नमस्ते मेरी कर देना।" बीता समय वापिस नहीं आता ।

इंजैक्शन कहाँ लगाऊँ

ijohu dekj
çDVh'kuj

"मेहरबानी करके मेरा कमरा खाली कर दो डाक्टर साहब, अपना क्लीनिक कहीं और खोलो जाकर।" मकान मालिक की बात सुनकर मैं एक दम हक्का बक्का रह गया। अचानक इसे क्या हो गया है ? मैंने ऐसी क्या गलती कर दी है? फिर वह बोला, "ना जाने कैसे–2 डरावने टी.बी. के मरीज आते रहते हैं और थूकते रहते हैं। हमें भी बीमारी लग जायेगी।"

अच्छा, तो यह बात है। वह नए मरीज अरविन्द की नाजुक हालत देखकर घबरा गया था। वाकई में अरविन्द की हालत बहुत जर्जर थी। टी.बी. ने उस बेचारे को हड्डियों के एक ढांचे में तब्दील कर डाला था।

मैंने फौरन उस मरीज को वापिस उसके ऑटो में बिठाया और यह कहकर चलता किया कि, "अभी तुम जाओ, दवा लेकर मैं तुम्हारे घर आता हूँ।" उसके जाने के बाद मैंने जैसे तैसे अपने मकान मालिक को शाँत किया और वादा किया कि, "अब यह मरीज अरविन्द यहाँ कभी नहीं आयेगा।"

उस दिन के बाद मैं खुद अरविन्द की दवा तथा टीका लेकर उसके घर जाता रहा। उसे इंजैक्शन लगाते समय मुझे बेहद तकलीफ होती क्योंकि उसके कूल्हे पर माँस तो जैसे था ही नहीं। सुई घुसाते ही सीधी जाकर हड्डी से टकराती थी। दिल पर पत्थर रखकर जैसे तैसे मैंने उसका इलाज टी.बी. नं0 867/12 के तहत शुरु किया। मुझे बहुत चिंता थी क्योंकि अरविंद ने पिछले साल भी टी.बी. का ईलाज किया था लेकिन बीच में ही छोड़ दिया था। शुक्र है अबकी बार कोई गलती नहीं की। मेहनत सफल हुई। अरविन्द न केवल ठीक हो गया बल्कि काफी हट्टा कट्टा हो गया। 6 महीनों में 6 किलो वजन बढ़ गया था। एक दिन उसे देखकर मेरे मकान मालिक को तो विश्वास ही नहीं हुआ कि यह वही मरीज है जो हड्डियों का ढाँचा हुआ करता था। हैरानी से उसका मुँह खुला का खुला रह गया। फिर अरविंद के जाने के बाद वह मुझसे बोला, "चमत्कार हो गया। मुर्दे में जान डाल दी। मुझे माफ कर दो डा0 साहब। जिन्दगी भर यहीं रहेगी आपकी क्लीनिक। मेरे घर को छोड़ कर कभी मत जाना जी।" उसकी आवाज में पश्चाताप झलक रहा था।

जुदाई

शशि बाला
टी.बी.एच.वी., सिविल
डिस्पेंसरी ओल्ड फरीदाबाद

''शशी बेटी कुछ ऐसा चमत्कार कर कि ये बुढ़िया भी मेरे संग चल दे। मेरे जाने के बाद इस बेचारी का क्या होगा ? यह तो अकेली बाजार जाकर कभी एक किलो आटा भी खरीद कर नहीं लाई।'' चमनलाल की बात सुनकर मैं दंग रह गई। इतनी निराशा! चमनलाल की उम्र 62 साल की थी। और मैं उसका पहली श्रेणी का इलाज टी.बी. नं0 53/10 के तहत कर रही थी। शुरु–शुरु में तो चमन लाल ने ठीक तरह से दवा ली और काफी आराम भी मिला। लेकिन अब 2 हफ्ते से वो दवा लेने नहीं आ रहा था जिस वजह से मुझे दवा के पत्ते उठाकर उनके घर आना पड़ा था। उसकी पत्नी वाकई बहुत बूढ़ी और कमजोर दिखती थी। वो काँपती हुई आवाज में बोली, "बेटी इसे समझा, जिस दिन से हमारे दोनो बेटों ने हमें अपने घर से निकाल बाहर किया है और किराए के इस कमरे में शरण ली हैं, ये बुढ्ढा बहुत उदास रहता है, रोता रहता है। दवा खाई या नहीं–इसे कोई परवाह नहीं है।"

"जब मेरे जिगर के टुकड़ों ने ही मुझे मरने के लिए लावारिस छोड़ दिया है तो मैं अब जी कर क्या करुँगा ?" बाबा बोला, "हमारा अच्छा खासा परिवार था–बेटे, बहुऐं, पोता, पोती–हर बात की मौज थी। टी.बी. की मनहूस छाया पड़ते ही सब खून के रिश्ते खत्म।" मैं समझ चुकी थी कि इस मरीज को बीमारी की चिंता कम थी और बच्चों से बिछुड़ने का गम ज्यादा।

मेरे बार–बार उनके कमरे के चक्कर लगाने और जबरदस्ती दवा खिलाने के बावजूद चमनलाल की हालत गिरती गई और 23.03.2010 को उसने आखिरी सांस ली। बेचारी बुढ़िया का रोना मुझसे देखा न गया।

मनुष्य के जीवन में रिश्तों की और प्यार की कितनी अहमियत होती है। माँ–बाप अपने बच्चों को कितने कष्टों से पालते पोसते हैं। फिर उन्हें बुढ़ापे में प्यार तथा सहारे की जरुरत होती है जो ना मिलने से उनका दिल टूट जाता है। मैंने अपने टी.बी. के रजिस्टर में चमनलाल की मौत का कारण यद्यपि टी.बी लिखा लेकिन मेरा दिल जानता है चमन लाल टी.बी. से नहीं मरा बल्कि अपने बच्चों की जुदाई के गम में मरा।

टी.बी. भगाने का मूल मंत्र–जागरूकता

डॉ. बीना शर्मा
डिप्टी सिविल सर्जन, टी.बी.
फरीदाबाद, हरियाणा

बीमार होने पर आधे भारतवासी पहले नजदीक के प्राइवेट क्लिनिक में पहुँचते हैं। भारत के गावों व शहरों में ज्यादातर ऐसे क्लिनिक तो अनपढ़, गँवार, अधकचरे "डॉक्टरों" ने खोल रखे हैं जो टी. बी. का गलत–शलत ईलाज करते है। जिसका अर्थ है– बीमारी की सही पहचान ना कर पाना, दवाओं का चुनाव गलत होना, उनकी मात्रा यानि डोज़ कमती या ज्यादा होना, घटिया लोकल कंपनी की दवाएं प्रयोग करना इत्यादि।

इसके अलावा मरीज भी जानकारी के अभाव के चलते अमूमन तरह–2 गलतियाँ करते फिरते है जैसे–ईलाज पूरा ना करना, अधूरा छोड़कर बार–2 गायब हो जाना, जल्दी–2 दवा या डॉक्टर बदलते फिरना, खुद ही कैमिस्ट से पूराने नुस्खे दिखाकर दवा–दारु अपने आप करते चले जाना, महंगे वाला कैप्शूल खरीदने से कतराना या ''पीली गोली'' से गैसे बनती है," या " सफेद गोली बहुत कड़वी है" कहकर उसे ना खाना। बस हर तरह से अपनी मनमानी करते चले जाना। इन सबका नतीजाः धीरे –2 टी बी. की दवाएं बेअसर होती चली जाती हैं। दवा पानी बन जाती है। मरना तो दूर की बात है टी.बी. के किटाणु इन दवाओं को आराम से हजम कर जाते हैं। ऐसे मरीज को एम.डी.आर. केस कहते हैं। ऐसे मरीज इसी किस्म की खतरनाक लाईलाज बीमारी फेलाने में सक्षम होते हैं। इनके सगे संबंधियों को अगर इनसे बीमारी लग जाए तो बो शुरू दिन से ही खतरनाक लाइलाज एम.डी.आर. हो सकती है। अगर आज भी हम युद्ध स्तर पर जागृति नहीं फैलाएंगे तो शायद हम वापिस अपने बाप दादा के उसी युग में पहुँच जाएंगे। जब टी.बी. लाइलाज हुआ करती थी टी.बी. होने का अर्थ था मौत का पैगाम।

भूखे पेट

शशि बाला
टी.बी.एच.वी., सिविल
डिस्पेंसरी ओल्ड फरीदाबाद

भावना की हालत बहुत सीरियस थी। अपने आप से वह एक कदम भी नहीं चल पा रही थी । उसका पति उसे गोद में उठाकर ओल्ड फरीदाबाद में डिस्पेन्सरी में लाया था। पीछे–2 उसके दो छोटे–छोटे बच्चे भी मेरे पास आ कर मेरी टाँगों से लिपट गये थे।

भावना को बहुत तेज बुखार था। छाती के दर्द से कराह रही थी। तेज–तेज साँसे ले रही थी। बिल्कुल दुबली पतली कमजोर थी। पिछले 4–5 महीने से बीमार थी। मैंने उसका कार्ड पढ़ा। डा0 रमन कक्कड़ ने उसको पहली श्रेणी की टी.बी. की दवा देना निर्धारित किया था, उसके फेफड़े की झिल्ली में पानी था। यह फेलने वाली टीबी नही थी। शुक्र है, उसके दोनो नन्हे–मुन्हे बच्चों को संक्रमण का कोई खतरा नही था।

मैंने उसकी दवा का डिब्बा (टी.बी. नं0 329/12) भारत कालोनी वाली डिस्पेन्सरी (जो उसके घर के बगल में थी) में रखवा दिया । जहाँ दशरथ लैब टैक्निशियन की देख रेख में उसकी दवा नियमित चलने लगी । करीब 15–20 दिन बाद उसका पति भावना को फिर से उठाकर मेरे पास लाया। मीयाँ–बीवी दोनो बहुत उदास थे। बोले, "शशि दीदी, कुछ करो। कोई आराम नहीं है।" जाहिर था कि उसकी हालत और ज्यादा बदतर हो गई थी। मैंने फौरन उन्हें दोबारा बी.के. अस्पताल भेजा और डा0 कक्कड़ को फोन भी कर दिया। जाँच के बाद उन्होने बताया टी.बी. की दवा धीरे–धीरे असर करेगी। कुछ भी हो जाये दवा नहीं छूटनी चाहिए। हाँ, बुखार व दर्द के लिये अलग से कुछ दवाइयाँ दिलवा दी थी।

मुझे मालूम था कि बहुत देर हो चुकी है। भावना तो अब शायद बच नहीं पायेगी। भावना बोली, "शशि दीदी, मेरे बाद इन नन्हे मुन्नों का क्या होगा। ये दोनो बच्चे तो आजकल कई बार भूखे ही सो जाते हैं।" दोनो मासूम बच्चे आपस में खेला–खेली कर रहे थे, खिलखिला रहे थे। अपने परिवार पर मँडराती हुई प्रलय से बेखबर थे। मेरा मन बहुत दुखी था। उस रात मैं भी भूखे पेट ही सो गई।

कई महीनों बाद मैं अपनी टीबी की रिपोर्टों में व्यस्त थी। अचानक हमारी नर्स ने मुझे बर्फी खिला दी। "यह किस खुशी में ?" मैंने पूछा। उसने जवाब दिया ''अपनी रिश्तेदार से पूछो जो बाहर खड़ी हैं।" उत्सुकतावश मैं उठी और कमरे से बाहर आई। देखा एक सुन्दर सी स्वस्थ सी महिला मिठाई का डिब्बा लेकर खड़ी है। मुझे देखते ही वह हँसकर बोली," शशि दीदी, मैं तो जीने की आस ही छोड़ चुकी थी। आपका अहसान मैं जीवन भर नहीं उतार सकती। " मैं हैरान परेशान थी "आप कौन हो ?" मैंने पूछा।

"भावना" उसके दोनों बच्चे भाग कर आये और मेरी टांगों से लिपट गये। काश! हर टी.बी. रोगी के साथ ऐसा चमत्कार हो पाता।

मेरी कृष्ण लीला

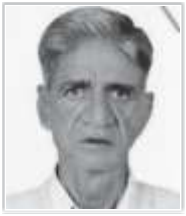

कृष्ण लाल

प्रियंका जी ने मुझसे कहा, "कृष्ण लाल जी, यह लीजिए आपकी दवा का आखिरी पत्ता। आपका कोर्स पूरा हो गयां है।" मेरा दिल किया कि मैं नाचने लगूँ। मैंने अपने ऊपर काबू पाया और कहा, "आपने मुझे सही जानकारी दी, लगकर सही तरीके से दवा दी। आपकी मेहनत व मेहरबानी से मैं अब बिल्कुल स्वस्थ हो चुका हूँ। बुखार और खाँसी तो शुरु में ही गायब हो गये थे। अब वजन भी 5 किलो बढ़ गया है। "

प्रियंका जी बोली, "अकंल जी, यह सब आपकी अपनी मेहनत का फल है। बिना नागा किए दवाई खाते रहे। मेरे कहे मुताबिक अपने रहन–सहन व खान–पान में सावधानी बरतते रहे। यहाँ तक कि आपने बीड़ी, शराब को भी त्याग दिया।"

कई महीने देखते ही देखते कैसे गुजर गए कुछ पता ही नहीं चला। लेकिन जब मुझे दोबारा खाँसी व बुखार सताने लगा तो मैं डबुआ कालोनी की डिस्पेंसरी में प्रियंका जी से जाकर मिला। उन्होने फौरन मेरा पिछला कार्ड (टी.बी. नं0 128 / 11) निकाला तथा बी.के. सरकारी अस्पताल में राजकुमार जी (एस.टी.एल.एस.) को फोन करके मेरी सिफारिश की और मुझे वहाँ के लिए रेफर कर दिया। राजकुमार जी ने मेरी बलगम की जाँच की तो उसमें कीटाणु भरे पड़े मिले। उन्होने मुझसे कहा, "माफ करना कृष्ण लाल जी, आपको टी.बी. का प्रकोप दोबारा बन गया है।"

यह सुनकर मुझे बहुत ठेस लगी, आँखों में आँसू आ गए। मैंने कहा, "माफी तो मुझे मांगनी चाहिए – आपसे और प्रियंका जी से। आपको मालूम नहीं, मेरी अपनी गलती का ही नतीजा है यह। पिछली बार जब मैं बिल्कुल ठीक हो गया तो मैंने शराब पीना शुरु कर दिया था। कई बार तो चुपचाप जाकर दिन में ही पव्वा खरीदकर पी लेता था। तम्बाकू की जुगाली तो सारा दिन करने लग गया था। दूसरे नशों से भी कोई परहेज नहीं किया। नशे के लालच में पड़कर मैंने अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मार ली है।" पछतावे के आँसू मेरी आँखों से बहते जा रहे थे। "कसम खाता हूँ कि बाकी के जीवन में किसी भी नशे को हाथ नहीं लगाऊँगा।" प्रियंका जी ने दूसरी श्रेणी का इलाज चलाया टी.बी. नं0 677 / 12 के तहत। आज चार महीने हो चुके हैं दवा खाते हुए। चार महीने का इलाज अभी बाकी बचा है। डॉट्स ने मुझमें फिर से जान फूँक डाली है। खाँसी, बुखार सही हो चुके हैं। भूख जोरों से लगती है। कमजोरी भी गायब हो गई है और सबसे बड़ी बात प्रियंका जी के सेवा–भाव और सहयोग ने मुझमें उम्मीद जगा दी है। जो कोई भाई–बहन मेरी इस कृष्ण लीला को पढ़ रहा हो उससे हाथ जोड़कर विनती करता हूँ कि शराब एक जहर है। किसी भी किस्म का नशा करना यानि अपने मानव जीवन के साथ खिलवाड़ करना होता है।"

दुर्भाग्यवश पुस्तक छपने तक कृष्ण लाल जी की बलगम में दोबारा कीटाणु आना चालू हो गया था यानि दूसरी पारी का इलाज भी असफल हो गया था और वह अस्पताल में भर्ती थे।

जवाई राजा

ज्योति
(टी.बी.एच.वी.)

डेढ़ साल से जबसे मीना की शादी दिल्ली में हुई तभी से उसको खाँसी, बुखार सताने लगा । घरेलू नुस्खों से कोई आराम ना मिला । सारा दिन देह टूटती रहती थी, सिर व टाँगों में दर्द रहता था तथा भूख नहीं लगती थी । कमजोरी बढ़ती जा रही थी । उसने कई बार अपने पति तथा सास को अपनी खराब तबीयत के बारे में बताया लेकिन उन्होने इस तरफ कोई ध्यान नहीं दिया । सास कहती, "बहाने मत बनाओ ।" ससुराल में उसे काफी काम करना पड़ता था, जो उससे न बन पाता । हारकर एक दिन वो वापस फरीदाबाद अपने मायके में आ गई। उसकी बूढ़ी दादी उसको हमारे पास बी.के. अस्पताल में ले आई । मैंने पूरी बात ध्यान से सुनी और गुनगुनाया, "लम्बी खाँसी, लम्बा बुखार, वजन घटता जाए लगातार तो टी.बी. का शक करना मेरे यार ।" और फौरन उसकी बलगम की जाँच तथा एक्स–रे करवाया । बलगम में टी.बी. के कीटाणु मिले तथा एक्स–रे में बड़े–2 दाग जिन्हें देखकर डा. रमन कक्कड़ ने टी.बी. का इलाज शुरु करा दिया आज इस बात को डेढ़ महीना हो चुका है । अब मीना काफी स्वस्थ दिखती है । खाँसी, बुखार में पूरा आराम है, भूख अच्छी लगती है और वजन थोड़ा सही हो गया है ।

लेकिन आज मीना बेहद परेशान थी । वह बोली, "कल रात अचानक मेरा पति बिना बताए आ पहुँचा है मुझे लेने ।" मैंने मीना को समझाया, "ऐसे तो इलाज टूट सकता है, उसको बताओ कि अभी तुम्हारा इस हाल में ससुराल वापस चले जाना उचित ना होगा ।"

इस पर उसकी दादी ने मुझे टोका, "जवाई राजा किसी की नहीं सुनता । उसने कभी हमारी बच्ची को किसी डॉक्टर को भी नहीं दिखाया था । पिछले डेढ़ महीने से जब से आई है एक बार भी फोन तक करके इसका हालचाल नही पूछा । अब इसको वापस ले जाने की रट लगा रखी है ।" मीना बोली, "दीदी जल्दी से दिल्ली के लिए मेरा रेफर फार्म बना दीजिए । इसे लेकर मैं सीधे रेलवे स्टेशन जाऊँगी । उन्होने कहा है एक बजे वाली गाड़ी पकडूँगा, प्लेटफार्म पे आ जाना वरना फिर कभी नहीं आऊँगा, तुम्हें लेने ।" पहले तो इसके पति ने टी.बी. के लक्षणों की अनदेखी की । डॉक्टर को नहीं दिखाया । मीना का रत्तीभर भी ख्याल नहीं रखा । अब जब बड़ी मुश्किल से इसकी गाड़ी लाइन पर आ गई है, तो खुद ही इसमें अडंगा लगा रहा है । रोती हुई बेबस मीना की सूरत देखकर मेरा मन किया कि प्लेटफार्म पर ही जाकर सरेआम समाज के सामने दो थप्पड़ जड़ दूँ ऐसे जवाई राजा को । लेकिन मैंने चुपचाप जल्दी से उसका रेफर फार्म बनाया और उसे चलता किया ।

आज्ञाकारी मरीज

डा0 रमन कक्कड़
सम्पादक
(टी.बी. स्पेशिलस्ट)
बी.के. अस्पताल, फरीदाबाद

संतोष कुमार को मैंने दिल्ली के मशहूर मेहरौली टी.बी. अस्पताल के लिए जब रेफर किया तो वो बहुत उदास और दुखी हो गया। वह बोला, "जी मैंने तो आपके इलाज की एक खुराक भी नहीं छोड़ी, सब नियमपूर्वक समय पर खाई। फिर भी मेरी बलगम के कीटाणु क्यों साफ नहीं हुए ?"

अब मैं क्या जवाब देता। संतोष बिल्कुल सच बोल रहा था। मैंने खुद कई बार इसकी दवा देने वाले डॉट प्रोवाइडर डा0 आर.के. शर्मा से संतोश के बारे में पूछताछ की थी। जिन्होने बताया था कि पहले कोर्स (टी.बी. नं0 901/10) के दौरान संतोश ने कभी कोई लापरवाही नहीं बरती। इसके बावजूद इसे आराम नहीं आया और इसका दूसरा कोर्स चलाना पड़ा था (टी.बी. नं0 878/11) अब भी टी.बी.एच.वी. दीपमाला जी ने मुझे रिपोर्ट दी थी कि संतोश एक बहुत ही आज्ञाकारी व जिम्मेवार मरीज है।

दुर्भाग्यवश, कई महीनों के इलाज के बावजूद इसके लक्षणों में कोई सुधार नहीं आया। दिनांक 29.05.2012 को भी स्पूटम पॉजिटिव आया यानि बलगम में कीटाणुओं की मौजूदगी बरकरार रही। इसका मतलब था कि संतोष की दूसरी श्रेणी की दवा भी अब फेल साबित हो चुकी थी। इसीलिए अब मेहरौली जैसे बड़े अस्पताल में इसकी बलगम का कल्चर टेस्ट करवाना बेहद जरुरी था।

संतोष तो दुखी था ही, उसकी बीवी कविता अपनी चार साल की बेटी "प्राप्ति" को गोद में उठाए रोती जा रही थी। मैंने उनको हौंसला बंधाया। हालांकि अंदर से मैं खुद इस घटनाक्रम से बेहद आहत व निराश था। मुझे इस परिवार का भविष्य अंधकारमय नजर आ रहा था। शायद संतोष के टी.बी. के कीटाणु करीब–करीब लाइलाज हो चुके थे। यानि टी.बी. की पहली पंक्ति की सर्वोत्तम दवाऐं बेअसर साबित हो गई थी।

सन्तोष की मम्मी से एक दिन अचानक मुलाकात हुई तो मैंनें उत्सुकतावश उससे पूछा, "बीबी, तुम्हारे बेटे संतोष की कल्चर की रिपोर्ट दिल्ली से आ गई क्या ?" वो रोने लग पड़ी। मैंने पूछा, "अरे रोने की क्या बात है।" वो और ज्यादा फफक–फफक कर रोने लगी और फिर काफी देर के बाद थोड़ा संभल गई और बोली, "जीवन से निराश होकर 3 जुलाई को संतोष ने फाँसी लगा कर खुदकशी कर ली।"

कमरतोड़ गरीबी

विजय पाल
टी.बी.एच.वी. बल्लबगढ़

एक घंटे की माथा पच्ची के बाद कहीं जाकर मुझे उस रोती हुई बुढ़िया की राम कहानी कुछ यूँ समझ आई थी।

बुढ़िया की बहू रफीकन पिछले 4 महीने से खाँसी, बुखार इत्यादि से बीमार थी। प्राइवेट डॉक्टरों तथा नर्सिंग होमों के महंगे–2 इलाजों के चक्कर में बुढ़िया पर कर्जा बढ़ते–2 अस्सी हजार रुपये (80,000/–) तक पहुँच गया था । अब परिवार को खाने तक के लाले पड़ गये थे । परिवार की रीड़ की हड्डी कतई टूट चुकी थी।

कई बार बेहद गरीब व्यक्ति को जिसे दो वक्त की रोटी भी नसीब नहीं हो पाती, ऐसों को भी कुछेक लालची किस्म के डॉक्टर बेकार के मँहगे–2 टेस्टों की चक्की में पीस डालते हैं।

यह भी एक किस्म की हिंसा ही होती है। अब इस मरीज रफीकन के हाथ में सी.टी. स्केन, अल्ट्रासाऊँड इत्यादि की रिर्पोटें तो भरी पड़ी थी लेकिन मामूली सी दिखने वाली बलगम की जाँच अब तक किसी ने नहीं करवाई थी–एक खाँसी से पीड़ित मरीज के साथ ये तो सरासर अन्याय था। मुझे बेहद दुख हुआ।

डॉक्टर लोग कब समझेंगें कि गरीबी भी तो एक किस्म का रोग ही है। जानबूझ कर किसी को गरीबी की भट्ठी में झोंक देना एक महापाप है। वो भी एक डॉक्टर के द्वारा। मरीज तो भरोसा कर के सीधे डॉक्टर की हथेली पर अपनी जान सौंप देता है। उसका पूरा जीवन दाँव पे लगा होता है डॉ0 के विश्वास पर।

अनार का जूस

डा0 रमन कक्कड़
सम्पादक (टी.बी. स्पेशिलस्ट)
बी.के. अस्पताल, फरीदाबाद

"डॉ0 साहब, मैंने अपनी पत्नी के लिए रोजाना अनार का जूस लगवा दिया है। बादाम, काजू भी खिला दूँ क्या ? फायदा करेंगें इसकी टी.बी. में ?"

मैंने घूमकर उस व्यक्ति को ऊपर से नीचे तक निहारा। दिखने में बेहद गरीब था । मैं उस की बात सुनकर सकपका गया । मैंने पूछा, "तुम काम क्या करते हो ?"

"जी, रिक्शा चलाता हूँ । नीलम–बाटा रोड़ पर मेरी झुग्गी है । तीन छोटे–2 बच्चे हैं, वहीं सरकारी स्कूल में पढ़ते हैं । जैसे भी हो डॉ0 साहब, मेरी पत्नी की बीमारी को ठीक कर दो ।" उसकी आँखों में आँसू छलक आये।

"अनार का जूस कितने का आता है ?" मैंने पूछा ।

उसने उत्तर दिया,"जी 60 रुपये । जान है तो जहान है । आप जो भी बताऐंगें मैं इसको ला के दूँगा जी । मेरा और मेरे बच्चों का यही तो सहारा है ।" उसका अपनी पत्नी व परिवार के प्रति इतना प्रेम देखकर मेरा मन भर आया । मैंने फिर ऊँची आवाज में (ताकि सभी मरीज सुन पाऐं) उसे यूँ समझाया, "इसमें कोई शक नहीं कि टी.बी. गरीबों की बीमारी है । खाने पीने की कमी से जो लोग कमजोर हैं, कुपोषण के शिकार हैं उन्हीं में ये बीमारी ज्यादा पनपती है । टी.बी. के इलाज के दौरान अच्छी खुराक खानी चाहिए जैसे – दूध, दालें, रोटी, हरी सब्जियाँ, फल इत्यादि । चाहे भूख लगे या ना लगे, तीनों टाइम डटकर खाना खाना चाहिए। "रिक्शा वाला बोला," जी कहते हैं कछुए का सूप तथा खरोड़ों (पायों) की तरी बहुत फायदा करती है, क्या ये सच है ?" मैंने जोर से कहा, "सब बकवास है । तुम बेकार में अनार के जूस पर अपना पैसा बर्बाद मत करो, काजू–बादाम को तथा कछुए को भूल जाओ, ये सब बेकार के टोटके हैं। मौसम के सस्ते फल, एक उबला हुआ अंडा कभी कभार थोड़ा पनीर व सोयाबीन खिला देना अपनी पत्नी को। घर में दाल रोटी, सब्जी खूब उपलब्ध रहे। सही दवा नहीं रुकनी चाहिए। बस अपने आप मरीज ठीक हो जाता है ।"

रिक्शे वाले ने फिर पूछा, "जी कोई बढ़िया सा टॉनिक ही लिख दो ।" मैं फिर जोर से चिल्लाया, "मंहगे–2 टॉनिक, ताकत की या हाजमे की दवाईयाँ इत्यादि भी बेकार होती हैं। बस चुपचाप टी.बी. की दवा चलती जाए और संतुलित पौष्टिक आहार मिलता रहे, मरीज ठीक हो जाएगा ।"

बलगम में खून

रमेश चन्द माहोर
टी.बी.एच.वी.

हमारा पड़ोसी अपनी बीवी बच्चों के साथ मेरे पास अस्पताल आया। मियाँ–बीवी दोनों रोनी सूरत बनाकर बहुत उदास स्वर में बोले, "जी हमारे बेटे को बचा लो।" मैंने उसके लड़के को एक नजर देखा। देखने में वह लड़का तो भंला चँगा लग रहा था । सो मैंने पूछा, "क्या हो गया है इसे ?" पिता बोला "टी.बी. की बीमारी।"

"इसकी बलगम की जाँच रिपोर्ट दिखाओ।" मैंने कहा। "जी बलगम की जाँच तो नहीं कराई अभी।" पिता ने जवाब दिया। ''अच्छा तो छाती का एक्स–रे दिखाओ। "

"एक्स–रे तो नहीं कराया।"

मैंने पूछा "तो किस डा0 ने टी.बी. घोषित की है ?"

"किसी डॉक्टर को अभी नहीं दिखाया। सीधे आपके पास आये हैं।"

"तो तुमने कैसे कह दिया कि इसे टी.बी. है? मैंने पूछा।

"जी इसके मुँह से खून आया है।" उसकी पत्नी बोली।

मैंने कहा "मुँह से खून आना यानि टी.बी.। इससे ज्यादा पक्की निशानी और क्या होगी टी.बी. की?"

"खाँसी बलगम में खून आने का सीधा मतलब है टी.बी.– यह सरासर गलत है। खून तो दांतों व मसूड़ो से भी आ सकता है।"

उसका बेटा बोला, " जी दाँत तो मेरे ठीक–ठाक हैं।"

फिर मैंने कहा, " गले में कोई बीमारी जैसे टॉसिल या नाक में नक्सीर से भी मुँह से खून आ सकता है।"

वो तीनों सोच में पड़ गये।

"निमोनिया, दमा, ब्रान्काइटिस या हुक्का बीड़ी की लत इत्यादि से भी किसी–2 को खाँसी में खून आ सकता है।

वो चुपचाप मेरी बात सुन रहे थे। सो मैं बोलता गया। "पेट में अल्सर, मेधे में घाव या जिगर की बीमारी में भी खून की उल्टी आ सकती है।"

फिर मैनें उनको समझाया ''बहुत से मरीज खाँसी में खून आने पर बिना सोचे समझे बार–2 टी.बी. का इलाज करवाते रहते है जो सरासर अनावश्यक है व पागलपन है। टी.बी. का एक ही यकीनी सबूत है–बलगम की जाँच में टी.बी. के कीटाणु पाए जाना। यानि स्पूटम पॉजिटिव रिपोर्ट। जाओ पहले इसकी बलगम की जाँच व एक्स–रे करवाओ।" उसकी बलगम में कीटाणु नहीं मिले व एक्सरे भी साफ आया। बाकी सारी रिपोर्टें भी सही निकली। मामूली दवा से लड़का ठीक हो गया, और आज तक ठीक ठाक है।

आशा की किरण

विजय पाल
टी.बी.एच.वी.

अम्मा और उसकी बहू दोनो गले लगकर सिसक–2 कर रो रही थी । चुप होने का नाम ही नहीं ले रही थी । मैंने कई बार समझाया कि टी.बी. से इतना घबराने की जरुरत नहीं है, यह अब जानलेवा बीमारी नहीं है, इलाज से ठीक हो जाती है । लेकिन मानो उनको ना कुछ सुन रहा था, ना समझ आ रहा था । बीच–बीच में बुढिया बुढ़बुढ़ाई, "मेरी बहू की बीमारी अब मेरे पूरे परिवार को लग जायेगी" फिर जोर–जोर से वही रोना–धोना । बहु बोली, "मेरे छोटे–2 बच्चे भी बीमार पड़ जायेंगें" और मातम मनाने लगीं ।

मैं समझ चुका था कि इनका दिल टूट चुका है । दोनों बिल्कुल निराशा के कुएँ में गिर चुकी हैं । इस वक्त इन दोनों को बस एक ही चीज की जरुरत थी और वो है आशा की किरण ! सहानुभूति ! हौंसला अफजाही । मैंने बुढ़िया के सर पे हाथ रखा और काफी देर तक चुपचाप ऐसे ही खड़ा रहा । थोड़ी देर में वो दोनों थोड़ा चुप कर गई तब मैंने कहा, "अम्मा अब मेरी बात ध्यान से सुनो" मैंने देखा अब वो सुनने के मूड में थी तो मैंने बोलना शुरु किया, "आज के युग में टी.बी. एक जानलेवा बीमारी नहीं रह गई । इसकी बढ़िया दवाऐं उपलब्ध है, मरीज बहुत जल्दी स्वस्थ हो जाते हैं ।"

अम्मा ने पूछा, "लेकिन बच्चों को भी तो लग जायेगी ?" मैंने जोर देकर कहा, "तुम्हारे परिवार में किसी को कोई खतरा नहीं है, क्योंकि तुम्हारी बहू को पेट की गाँठों में टी.बी. है ना कि फेफड़ों में।" अम्मा फिर बोली, " अब तक के इलाज पर सारी जमा पूँजी बर्बाद हो चुकी है । अब तो एक पैसा भी नहीं इलाज के लिए ।" मैंने कहा टी.बी. की पूरी जाँच व इलाज मुफ्त मिलता है, सरकार की तरफ से । आज के बाद तुम्हारा एक पैसा भी खर्च नहीं होगा ।"

बस देखते ही देखते सास बहू की जोड़ी की चेहरे की रंगत कुछ–2 वापस आ गई । माहौल थोड़ा हल्का हो गया, मैंने हँसकर कहा, "आज शाम को 6 बजे मैं आपके घर आऊँगा, बाकि कुछ पूछना हो तो जब पूछ लेना ।" तो अम्मा ने हँसकर जवाब दिया, "बस एक बात और बता दो कि आप चाय में कितना शक्कर पीते हो ?"

टी.बी. के हर मरीज को प्यार, दया व अपनेपन की जरुरत होती है । उसको हौंसला देकर यदि हम शुरु में ही उसका विश्वास जीत लें तो अधूरे ईलाज का सवाल ही नहीं उठता । ईलाज के बाद जब एक मरीज स्वस्थ हो जाता है तो हमें इतना सुकून मिलता है कि जितना मंदिर या मस्जिद जाने पर ।

एक छोटी सी सलाह

योगेन्द्र रावत
प्रैक्टीशनर

मैं अपने दोस्त के घर बैठा चाय की चुस्की ले रहा था । मुझे बार–2 उलझन सी महसूस हो रही थी क्योंकि बाजू वाले कमरे में कोई बार–2 खाँस रहा था । मैंने अपने मित्र से पूछा तो उसने कहा "कोई नहीं, हमारा किरायेदार है।" लेकिन खाँसी की आवाजें मुझे बैचेन कर रही थी। मुझसे रहा ना गया और मैं उठ कर उस कमरे में जा पहुँचा। किराएदार एक जवान लड़का ओमप्रकाश था, बार–2, बुरी तरह से खाँसता था।

ऐसे कि उसके थूक के छींटे बाहर गिरते, आँखों में आँसू आ जाते। मैंने उसका माथा छुआ, उसे बुखार भी था। उसने बताया 3–4 महीने से दवाईयों से कोई आराम नहीं आ रहा था। बस मुझे शक हो चुका था। मैंने सलाह दी, "कल सुबह सरकारी अस्पताल जाकर बलगम की जाँच कराओ।"

बिना देर किए उसने अगले ही दिन बलगम की जाँच कराई। और वही हुआ जिसका मुझे डर था, टी.बी. के कीटाणु भरे पड़े मिले । बस फिर क्या था । टी.बी. का इलाज चला। उसने अपनी खटिया ऊपर छत पे डाल ली और मुँह पर हमेशा रुमाल बाँध के रखता था।

नियमानुसार लगातार दवा खाई और 6 महीने में उसकी बीमारी जड़ से खत्म हो गई और वह पूर्णतयाः स्वस्थ हो गया । आज पड़ोस में ही उसका अपना खरीदा हुआ मकान है, अपने बीवी बच्चों के साथ खुशी–खुशी रहता है ।जब भी आते जाते मुझे मिलता है, तो एक ही बात कहता है, "आपकी एक छोटी सी सलाह, कि बलगम चैक करवाले, ने मेरी जिंदगी बदल डाली।

अगर मैं बलगम की जाँच ना करवाता, समय पर बीमारी का पता न चल पाता, बहुत देर हो जाती और शायद यह बीमारी मेरे बच्चों को भी चिपक जाती ।"

बड़ा दिल

सविता रानी
TBHV

मैंने सपने में भी नहीं सोचा था कि टी.बी. का प्रकोप दिल में भी हो सकता है । कमाल हो गया । डॉ0 साहब कह रहे थे? "नज़मा की दिल की झिल्ली में पानी का रिसाव हो गया जिससे उसके एक्स–रे में दिल की छाया बहुत बड़ी–बड़ी नज़र आई । दिल का अल्ट्रासाऊँड यानि (ईको) करने पर इस बात की पुष्टि हो गई कि उसे "पेरिकारडियल इन्फ्यून" नामक तकलीफ ही है।" डॉ0 वीरेन्द्र यादव जो कि फरीदाबाद के जानेमाने मशूर तजूरबे के हार्ड–स्पेशलिस्ट हैं उन्होंने इसकी बीमारी को घोषित किया था।

पिछले 3 महीने से नज़मा को बुखार आ रहा था, साँस फूलता था, सूखी खाँसी होती थी तथा काफी कमजोरी महसूस हो रही थी । आज जाकर आखिरकार उसकी बीमारी का पता चला था । मैंने उसे टी.बी. नं0 311/13 के तहत पहली श्रेणी का टी.बी. का ईलाज चालू कर दिया ।

बातों–बातों में डॉ0 रमन कक्कड़ ने हमें कुछ यूँ समझाया, "फेफड़े के बाहर की झिल्ली में अमूमन पानी पड़ जाता है, टी.बी. से । इसे Pleural इफ्यूज़न कहते हैं । भारत में इस किस्म की परेशानी बहुत अधिक पाई जाती है । अनेकों मरीज व बच्चे इसी से पीड़ित होते हैं।'' मैंने कहा, "डॉ0 साहब, मेरी पड़ोसन के पेट में टी.बी. का पानी आ गया था ।" डॉ0 साहब ने बताया, "इसी तरह कई पेट के रोगियों में पेट में पानी का रिसाव हो जाता है। साथ–2 गाँठें, आँतड़ी की सूजन इत्यादि पाया जाता है जोकि अल्ट्रासाउण्ड के टेस्ट से पकड़ में आ जाता है। नज़मा जैसा दिल की झिल्ली में पानी के रिसाव वाला केस तो बस एक आध ही मिलता है। जिनमें संक्रमण का खतरा नहीं होता ।"

टी.बी. की सुनामी

विजय पाल
टी.बी.एच.वी., सरकारी
अस्पताल एम्स बल्लभगढ़

जब मैं मुकेश के घर के अंदर घुसा तो मैं सहम गया । दिल में उदासी छा गई । मन बिल्कुल निराश हो गया । लेकिन मैंने धैर्य से काम लिया और सबसे पहले उस छोटे से घर का पूरा मुआयना किया ।

चार भाईयों और उनके करीब दस छोटे–2 मासूम बच्चों का वह एक भरा पूरा संयुक्त परिवार था । वे सब छोटे–2 से तीन घुटन भरे कमरों के अंदर रह रहे थे । मुकेश टी.बी. से पीड़ित था व उसकी बलगम में 2 प्लस कीटाणु भरे पड़े थे जो कल ही पता लगा था । मैंने उसको अच्छी तरह मुँह ढकने को तथा बाहर खुले में ज्यादा समय बिताने को कहा था । टी.बी. की पुस्तक भी दी थी । फिर भी वो वहीं छोटे से घुटन भरे माहौल में बच्चों के साथ खेल रहा था तथा जोर–2 से खांस रहा था ।

ऐसी विपरीत परिस्थिति में भी मैंने अपना आपा नहीं खोया, गुस्सा काबू किया तथा उन सबको बाहर ले आया तथा पेड़ के नीचे बैठाकर दोबारा से सावधानी के पाठ पढ़ायें । अगले दिन पूरे परिवार की जांच करवाई तो एक और झटका लगा – मालूम हुआ कि उसका बड़ा भाई सुरेश भी 3 प्लस स्पूटम पॉजिटीव वाली टी.बी से पीड़ित है । अब घर में एक नहीं बल्कि दो खतरनाक किस्म के स्पूटम पॉजिटिव मरीज थे जोकि एक बहुत ही मुश्किल परिस्थिति थी । दो–2 स्त्रोतों से परिवार को संक्रमण का बेहद खतरा था ।

अभी हाल ही में दोनों का ईलाज तो शुरु हो चुका है । मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि ऐसे मरीजों को व उनके परिवारजनों को सद्‌बुद्धि तथा जानकारी प्रदान करें ताकि टी.बी. की सुनामी भारत में थम जाये ।

सेवा भाव

पुलिस की नीली बख्तरबंद गाड़ी सामने खड़ी थी । चार पुलिस वाले 3 कैदियों को लेकर मेरे पास बी.के. अस्पताल के ओ.पी.डी. में आए । उनमें से एक कैदी बिजेन्द्र को मैं पहचानता था क्योंकि उसका टी.बी. का इलाज जारी था । उसने हँसते हुए कहा,"अब तो डा0 साहब मैं बिल्कुल ठीक हूँ।" उसके हाव–भाव देख मैं बहुत प्रसन्न हुआ । "इन चारों पुलिस वालों ने बीमारी में मेरी बहुत सेवा की है । घर पे रहता तो शायद मेरे बच्चे भी मेरी इतनी सेवा न करते ।" मैंने नजरें उठाकर उन चारों पुलिस वालों को निहारा, यह वही थे जो शुरु–शुरु में बिजेन्द्र को सहारा देकर, गोदी में उठाकर लाया करते थे । उनके हट्टे कट्टे शरीर थे । पुलिस की रौबीली वर्दी थी । दो के कंधों पर तो मार्डन किस्म की बन्दूकें भी थी । एक की कमर में पिस्टल लटक रही थी । उन चारों को देखकर तो अच्छो अच्छों के भी पसीने छूट जाऐं । देखने में वे हर एंगल से बिल्कुल खूँखार, निर्दयी मुश्टण्डे दिख रहे थे । कोई कल्पना भी नहीं कर सकता कि इनमें भी ममता व सेवाभाव हो सकती है । "इन चारों को जी मैंने अब अपना धर्म भाई बना लिया है ।

छवि इतनी सख्त व क्रूर, और अन्दर से इतनी नर्माई – बस नारियल की तरह मैं बहुत हैरान था । शूगर (शक्कर) के मरीज को, एच.आई.वी. संक्रामित व्यक्ति या कमजोर व कुपोशित व्यक्ति या नशेड़ी को टी.बी. पनपने का खतरा आम आदमी से कहीं ज्यादा होता है । बिजेन्द्र को कई सालों से डायबिटीज यानि शूगर की बीमारी है । इसी के चलते 2 साल पहले इसको नीमका जेल में ही टी.बी. की बीमारी बन गई थी । तब भी इसने लगकर 6 महीने सरकारी डाटस का कोर्स किया था और बिल्कुल ठीक हो गया था । लेकिन शायद शूगर पर सही कंट्रोल ना होने के चलते इसकी बलगम में दिसंबर 2012 को दोबारा से टी.बी. के कीटाणु पाए गये थे । अब इसका ईलाज 6 महीने हो चुका है, 2 महीने बाकी हैं । भगवान से प्रार्थना है कि अब बिजेन्द्र को टी.बी. से सदा के लिए मुक्ति मिल जाए । और जेल से भी ।

डा0 रमन कक्कड़

"सच्चा झूठा"

शारदा रानी
टी.बी.एच.वी., प्राइमरी
स्वास्थ्य केन्द्र, पल्ला

परमानन्द तथा उसकी पत्नी कृष्णा दोनों ही देखने में काफी सुलझे व समझदार लगते थे। मेरी हर बात को बहुत ध्यान से सुनते व दवा लेने समय पर आते। पहले परमानन्द (टी.बी. नं0 258/11) और कुछ महीनों बाद कृष्णा (टी.बी. नं0 701/11) दोनों का इलाज मैंने अपनी पल्ला की सरकारी डिस्पेन्सरी से चलाया था।

एक दिन कृष्णा मेरे पास आई और धीरे मेरे कान में बोली, "शारदा मैडम जी, प्लीज मेरे पति को डांटिए। वो रोज शराब पीते हैं। दवा का पत्ता भी नियम से नहीं ले रहे।"

कुछ दिनों बाद मैंने परमानन्द को टोका, "मैंने आपको समझाया था लेकिन सुना है आप दोबारा शराब पीने लग गए हो। क्या आप दोबारा बीमार होना चाहते हो ?" परमानन्द बोला, "मुझे मालूम है किसने आपके कान भरे हैं। मेरी बीवी कृष्णा बहुत ही शक्की मिजाज की औरत है। जबसे मुझे बीमारी बनी है मुझ पर तरह–2 के झूठे आरोप लगाती रहती है। झूठ बोलने की तो उसकी पुरानी आदत है। फैक्ट्री से घण्टा भर कभी लेट हो जाऊँ तो दरवाजे पर रोककर मुझे सूंघती है और दारु के बहाने रोजाना झगड़ा करती है।"

अब मैं क्या बोलती, चुप रही। समझ न पायी कि कौन सच्चा है और कौन झूठा। पहला कोर्स पूरा होने के पश्चात परमानन्द को फिर से बीमारी हो गई और मैंने उसका दोबारा से टी.बी. का ईलाज चालू किया (टी.बी. नं0 04/12)। इस बार मैं उससे काफी सख्ती से पेश आई। वह मान गया कि शराब पीता रहा है तथा उसने मुझसे झूठ बोलने के लिए माफी मांगी और कसमें खाई कि अब नशा नहीं करेगा।

उधर दुर्भाग्यवश कृष्णा भी दोबारा टी.बी. के लपेटे में आ गई। उसका भी दूसरी श्रेणी का ईलाज टी.बी. नं0 515/12 के तहत शुरु हो गया । उसने मुझसे कहा, " मेरा पति बिल्कुल नहीं मानता, रोजाना शराब पीता है, झगड़ा करता है, राशन तक भी नहीं लेकर आता।" सुनकर मुझे बहुत दुख हुआ। जिस गृहस्थी में इतना क्लेश, अनबन व अविश्वास हो वहाँ बरकत कहाँ से पड़ेगी? जिस परिवार के राशन के पैसे से शराब खरीदी जाये, उसके सदस्यों की खुराक कितनी घटिया किस्म की होगी तथा उनकी रोग प्रतिरोधक शक्ति तो क्षीण होती चली जाएगी। ऐसे माहौल में तो टी.बी. के किटाणु का वास होना कुछ स्वाभाविक ही है।

कुछ महीनों के बाद मुझे पता लगा कि परमानन्द दुनिया को छोड़ गया। उसकी पत्नी कृष्णा ने रोते हुए मुझे कहा, "शारदा मैडम जी, चाहे कुछ भी हो जाये अब मुझे ठीक कर दो। मुझे अपने छोटे–2 बच्चों को अकेले ही पालना है ।"

अस्पताल में भर्ती

विजेन्दर
एस.टी.एस., तिगाँव

"डा0 साहब, मेरे बापू को अस्पताल में भर्ती करवा दो जी।" रमेश ने मुझसे विनती की।

"क्यों भर्ती करवाना चाहते हो ?" मैंने पूछा।

रमेश पास आकर मेरे कान में धीरे से बोला, "जी इसे टी.बी. हो गई है।" रमेश की साँस से मुझे बीड़ी की बास आ रही थी।

"अच्छा तो फिर अस्पताल में भर्ती क्यों कराना चाहते हो ?" मैंने अपना प्रश्न दोहराया।

"मैंने बताया न–टी.बी. है, इसे टी.बी. ।" रमेश फिर धीरे से बोला।

"हाँ सुन लिया कि टी.बी. है, पर भर्ती क्यों ?" मैंने जोर से पूछा।

"इस बीमारी वाले को तो फौरन अस्पताल में भर्ती करवा देना चाहिए। कहते हैं कई मरीज तो पहाड़ों पर सैनेटोरियम में जाकर भर्ती हो जाते हैं। टी.बी. के मरीज को घर पर थोडें ही न रखा जा सकता है।''

मैंने उसे सख्ती से कहा आज के मॉडर्न जमाने में भी तुम्हारी सुई 50 साल पुराने ढकोसलों में अटकी पड़ी है। समय बदल चुका है। बढ़िया दवाईयाँ आ चुकी हैं। जिनसे अब टी.बी. का इलाज घर पर ही रहकर बड़े आराम से किया जाता है। अस्पताल में भर्ती होने की कतई जरुरत नहीं होती है।"

"क्यों मजाक कर रहे हो डा0 साहब, इसे घर पे रखने से सबको नहीं लग जायेगा यह छूत का रोग?"

"बिल्कुल नहीं। सही इलाज और सावधानी से ऐसा कुछ भी नहीं होता। बेवजह डर रहे हो तुम।"

"जी बापू सारा दिन खाँसता रहता है, इसकी बलगम में कीटाणु भी हैं।" उसके बापू के हाथ में स्पूटम पॉजिटिव रिपोर्ट थी जिसमें लाल पैन से 2 प्लस लिखा था। इसका पहला अर्थ था कि टी.बी. की पुष्टि। फेफड़े की टी.बी. का एक ही यकीनी सबूत होता है–बलगम की जाँच में कीटाणु पाये जाना। दूसरा अर्थ था–सावधानी अति आवश्यक। सो मैंने समझाया।

"सही इलाज चालू होने के थोड़े दिनों में ही बलगम शुद्ध (कीटाणु रहित) हो जायेगी। बस जब तक कीटाणु नष्ट हो न जाएं तब तक सावधानियाँ बरतो।"

"क्या–2 सावधानियाँ ?" रमेश ने पूछा। मैंने उसके बापू से ऊँची आवाज में कहा, "ज्यादा समय बाहर बिताओ खुले में, पार्क में या छत पर। मुँह पर रुमाल रखो । इधर उधर मत थूको। छोटे बच्चों से थोड़ा दूर रहो इत्यादि।"

मैंने उसके पिता का डॉट्स का इलाज शुरु करवा दिया।उसने लगकर 6 महीने इलाज करवाया। वह बिल्कुल ठीक–ठाक हो गया।

एम.डी.आर. रोगी तो एम.डी.आर. ही फैलाएगा

धर्मवीर शर्मा
(एस. टी. एस.)

17 साल की विद्यार्थी सपना (बदला हुआ नाम) जब खाँसी, बुखार से पीड़ित हुई तो वह एक नामी गरामी बड़े प्राइवेट अस्पताल में गई । वहाँ कई तरह के महँगे–2 टेस्ट किए गए । टी.बी. घोशित हुई और बहुत मंहगा ईलाज 8 महीने तक चला । आराम ना होने पर सपना के पापा उसे एक मशहूर नर्सिंग होम में ले गए । वहाँ पर दोबारा से अनेकों टेस्ट किए गए तथा उन्होने भी बदलकर ईलाज 4 महीने चलाया। गरीब परिवार की सारी जमा पूँजी इसी चक्कर में खत्म हो गई तथा कर्जा लेने की नौबत आ गई।

हारकर सपना मेरे पास हमारी डबुआ कालोनी की डिस्पेन्सरी में आ पहुँची। मैंने फौरन उसे बी.के. अस्पताल डॉ0 रमन कक्कड़ के पास भेजा जहाँ उसकी बलगम की जाँच हुई तथा रिपोर्ट 3 प्लस आई। उसकी बलगम के कलचर का टेस्ट करनाल से करवाया गया तो एक बहुत बुरी खबर निकलकर आई कि टी.बी. की सामान्य दवाईयाँ सपना की बीमारी पर बेअसर हो चुकी हैं । यानि दवा पानी बन चुकी है। उसे एक प्रकार की लाईलाज बीमारी बन गई है जिसे कहते हैं – एम.डी.आर. (मल्टी ड्रग रेजिस्टेंट) टी.बी. जिसका ईलाज ढाई साल चलेगा, जिसकी दवाईयाँ बहुत गर्म होती हैं।

प्राइवेट अस्पताल के बेहद व्यस्त डॉक्टरों ने ना केवल उस परिवार को गरीबी के दलदल में धकेल दिया बल्कि उसे सावधानी बरतने के लिए भी कभी ना बताया था । जिसके चलते इसी दौरान उसकी बहन को भी बीमारी लग गई। जिसका पहली श्रेणी का सामान्य टी.बी. का इलाज तो मैंने चला दिया है। साथ ही साथ उसकी बलगम कल्चर जांच के लिए करनाल भिजवा दी है। सपना की बीमारी पर तो सामान्य दवाऐं बेअसर हैं और जिसे सपना बीमारी फैलाएगी उसे भी ऐसी ही भयंकर एम.डी.आर. टी.बी. बनेगी । तो कहीं उसकी बहन भी ऐसी बीमारी से ग्रस्त तो नहीं हो चुकी ?यही सोच मुझे दिनरात खाए जा रही है।

मनहूस मकान

शशि बाला
टी.बी.एच.वी., सिविल
डिस्पेंसरी ओल्ड फरीदाबाद

22 साल के जवान लड़के पंकज (टी.बी. नं0 755/12) का ईलाज मैंने अपनी ओल्ड फरीदाबाद वाली डिस्पेन्सरी में शुरु किया। पंकज की हालत बहुत नाजुक थी। मैं जब उसके घर गई और परिवार से लम्बी बातचीत की तो उसके पापा बोले, "अब पंकज जरुर ठीक हो जाएगा। हमने अपना पुराना दिल्ली वाला मकान जिस पर काला साया था, हमेशा के लिए छोड़ दिया है। वही शापित मकान पिछले साल मेरे छोटे बेटे को तथा मेरे भाई को भी निगल गया था। भला हो मौलवी जी का जिन्होने मुझे साफ–साफ बताया कि, "भाई तुम्हारा मकान ही मनहूस है। यही सारी परेशानियों की जड़ है। ''इसीलिए महरौली टी.बी. अस्पताल से छुट्टी मिलते ही हमने पंकज को सीधा यहाँ ओल्ड फरीदाबाद के किराए के इस मकान में शिफ्ट कर दिया है। और रास्ते में सिद्ध बाबा से झाड़ फूँक भी करवा दिया है ताकि उपरी चक्कर का क्लेश ही खत्म हो जाये।"

मैंने उनको समझाने की कोशिश की कि, "इन सब वहमों को भूल जाओ। पंकज की बलगम की जांच में 3 प्लस कीटाणु मिले हैं। इसे यकीनन टी.बी. ही है। वहमों के चलते इसका पिछला कोर्स भी अधूरा छूट गया था। अबकी बार ठीक से 8 महीने ईलाज करो। टी.बी. की बीमारी से हमेशा के लिए छुटकारा मिल जायेगा। " परिवार के हाव–भाव से साफ था कि उनको मेरी बातों पर रत्ती भर भी विश्वास नहीं आया था। मैंने कई बार उनको यही संदेश देने की कोशिश की परन्तु सब बेकार। वैसे भी अब बहुत देर हो चुकी थी। आखिरकार 4 अगस्त 2012 को पंकज का देहांत हो गया।

काश, समय रहते उसके माता पिता अपने दकियानूसी व रुड़ीवादी विचारों के चंगुल से आजाद हो जाते और जान पाते कि झाड़–फूँक, ऊपरी चक्कर तथा मौलवी का ईलाज सब बेकार के टोटके हैं। जिनसे और कुछ नहीं केवल समय व पैसा बर्बाद होता है। बलगम में टी.बी. के कीटाणु का मतलब है–100 प्रतिशत टी.बी. जिसका ईलाज केवल अंग्रेजी दवाओं के पूरे कोर्स से ही होता है। टी.बी. में पहला इलाज एक सुनहरी मौका होता है। अगर पहली बार में ही पंकज को पूरा कोर्स करवाया गया होता तो वह आज भी इस दुनिया में हँस खेल रहा होता।

टी. बी. का शक होना, बेहद जरूरी

अमृत कुमार झा (लेखक)

एक दिन शाम को जब मैं थका हारा ऑफिस से वापिस आ रहा था तो एक पड़ोसी ने मुझसे कहा, "भैया मैं आपको कई दिनों से देख रहा हूँ। कमजोर होते जा रहे हो क्या हो गया आपको ?

मैंने उत्तर दिया, "कई महीनों से मेरी तबीयत खराब चल रही है। कुछ ना कुछ होता ही रहता है – बुखार, खाँसी, कमजोरी, भूख का ना लगना । ऑफिस जाने की कतई इच्छा नहीं होती । जी करता कि बस लेटा रहूँ । बॉस भी नाराज चल रहा है।" तो वो भला मानस बोला, "बुरा ना मानो तो एक बात कहूँ ?" मैंने कहा, "जी बताइए ।" उसने कहा, "लम्बी खाँसी, लम्बा बुखार और वजन का गिरना ये सब तो टी.बी. की निशानियाँ होती है।

फिर उसने मुझे सीधा बी.के. अस्पताल में डॉ0 रमन कक्कड़ के पास भेजा। तीन घंटे के अंदर अंदर मेरी बलगम में टी.बी. के कीटाणु पाए गए, एक्सरे में धब्बे और मेरे डॉट्स के इलाज का कार्ड बनाकर मुझे थमा दिया और मुझे अपने बड़खल गाँव के अपने नजदीकी डाट्स सेंटर में जाकर किसी डॉ0 एन.पी. शर्मा को मिलने को कहा जो मुझे 6 महीने दवा खिलाएगा ।

ढूँढते–2 जब मैं ठिकाने पर डाट्स सेंटर पहुँचा तो देखकर दंग रह गया, वो डॉक्टर कोई और नहीं बल्कि वही मेरा भला पड़ोसी था जिसने बिमारी का शक करके टी.बी. की पहचान में मेरी मदद की थी। बस फिर क्या था ? मेरी दवा अच्छी तरह से चालू हो गई। इतना ही नहीं डॉ0 शर्मा ने मुझे बुरे वक्त में अच्छी खुराक खाने के लिए 2000 रु0 भी दिए जो बाद में उन्होने वापिस लेने से मना कर दिया ।

एन.पी. शर्मा (प्रैक्टीशनर)

एक ही शर्त

जसवंत
एस.टी.एस. खेड़ी

"डा0 साहब कुछ कीजिए ना ! आज रात भी मुझे खाँसी के साथ बहुत खून आया ।" इमरत नामक मरीज़ बहुत डरा हुआ था । उसकी हौंसला अफज़ाई के लिए मैंने उसके कन्धे पे हाथ रखा तथा उसे प्यार से समझाया,"इमरत, तुम्हारा टी.बी. का दूसरी श्रेणी का ईलाज चालू हो गया है । धीरे–धीरे आराम आता है एकदम से नहीं । महीने दो महीने में काफी स्वस्थ हो जाओगे । बस एक शर्त है ।"

"कैसी शर्त डा0 साहब ?"

"शर्त ये कि टी.बी. की दवा अब रुकनी नहीं चाहिए । चाहे कुछ भी हो जाए टी.बी. का ईलाज जारी रहना चाहिए । "खून आता है" कहकर, घबराकर अगर तुम ईलाज को बीच में ही छोड़कर किसी दूसरे डा0 या ईलाज के चक्करों में भाग गए तो बहुत मुसीबत होगी। वरना, अगर दवाई सही ढंग से जारी रहेंगी तो समय के साथ स्वस्थ होते जाओगे।" इमरत ने कहा,"लेकिन डा0 साहब, दवा बहुत गर्म है, स्वाद कड़वा रहता है, मन खराब रहता है और कभी–2 उल्टी आने को जी करता है।"

मरीज तरह –2 के बहानों से ईलाज के बीच में छोड़ देते हैं, पलटी मार जाते हैं। दूसरे लोग भी बरगला देते हैं जैसे :–

1. खून आता है । चलो कहीं दूसरे अस्पताल में । 2. दवा से जी कच्चा होता है । 3. दवा गर्म है, पेशाब खून जैसा लाल आता है (जो असल में लाल दवा का रँग होता है)। 4. शादी में या मौत में जाना पड़ा। इसलिए शहर से ही गायब हो गए।

ये सब बहाने हैं अपना व अपने बच्चों का जीवन बर्बाद करने के ।

मैंने फिर समझाया, "चाहे भूख लगे, चाहे ना लगे, तीनों टाईम रोटी खाना चाहिए । सही खुराक भी बेहद जरुरी है । दवा की थोड़ी खुराकें खाने के बाद जी कच्चा होने इत्यादि जैसी परेशानी अपने आपसे गायब हो जाती है मानों शरीर को दवा की आदत पड़ गई हो ।

मैंने बाप–बेटे को अपनी खेड़ी की पी.एच.सी. में रखी टी.बी. की ए.बी.सी.डी. नामक पुस्तक पढ़ने के लिए थमा दी तथा अपने दूसरे मरीजों की तरफ चल दिया ।

कुदरत का करिश्मा

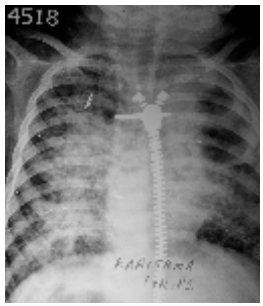

एक साल की नन्ही सी बच्ची करिश्मा अपने मम्मी–पापा की ही नहीं बल्कि तीनों बड़े भाई–बहनों की भी दुलारी है, निरंतर किसी ना किसी की गोद में हँसती खेलती है। 9 महीने की उम्र तक तो करिश्मा बिल्कुल स्वस्थ और मस्त रही। उसके बाद मानो ग्रहण लग गया। दस्त, बुखार और खाँसी रहने लगी। प्राइवेट इलाजों से रत्तीभर भी आराम ना आया चेहरा पीला पड़ गया। खून की भारी कमी हो गई। गंभीर हालत में मम्मी–पापा इसे गोद में उठाकर बी.के. सिविल अस्पताल में ले आए। बच्चा रोग विशेषज्ञ डा0 विकास गोयल ने इसको भर्ती किया, बहुत मेहनत से इसका 6 दिन तक का इलाज किया, खून भी चढ़ाया तथा छाती का एक्स–रे इत्यादि देखकर टी.बी. घोषित की।

एक साल की करिश्मा का वजन केवल 4.5 किलो था। टी.बी. का इलाज दो महीने चल चुका है, खाँसी, बुखार गायब हो गए हैं, वजन बढ़कर सवा पाँच किलो हो गया है। इसके पापा ने आज कहा, "हम तो इसकी उम्मीद छोड़ चुके थे। इसका ठीक होना भी कुदरत का एक करिश्मा ही है।"

बच्चों में ज्यादातर गर्दन की गाँठों की छाया मिलती है, या छाती के एक्स–रे में गाँठों की छाया मिलती है, या फेंफड़े की झिल्ली में पानी पड़ जाता है, या किसी हड्डी जोड़ में सूजन इत्यादि होती है। क्योंकि बच्चा खाँसकर बलगम निकाल ही नहीं पाता इसलिए बलगम की जाँच संभव नहीं होती और ना ही बच्चा किसी दूसरे को संक्रमित करता है। वो तो बस चुपचाप समाज के बड़े लोगों द्वारा दिये गये इन्फेक्शन को भुगतता चला जाता है।

डा0 रमन कक्कड़

देश की बहादुर बेटी – नाज़िया

नाजिया (लेखिका)

भारत में आज भी टी.बी. को समाज एक कलंक समझता है । कई मरीज समाज के डर से अपनी बीमारी को छुपाते हैं । कुछ तो लक्षणों की जानकारी होते हुए भी आगे बढ़कर अपनी जाँच नहीं करवाते कि कहीं टी.बी. का ठप्पा ना लग जाए। दोस्त, पड़ोसी व रिश्तेदार मरीज से धीरे–धीरे किनारा करने के चक्कर में रहते हैं। कई बार तो अपने खून वाले भी नफरत करते हैं । ऐसे विपरीत माहौल में एक बी.ए. की प्रथम वर्श की छात्रा नाजिया के द्वारा अपनी जुबानी अपनी बीमारी की कहानी तथा तस्वीर हमारी आने वाली नई पुस्तक में छपवाने का अनुरोध करना एक गज़ब के हौसले का उदाहरण है । हम देश की इस बहादुर बेटी को सलाम करते हैं। आशा करते हैं कि दूसरे मरीज इससे सबक लेंगें व टी.बी. के बारे में संवाद करने से झिझकेंगें नहीं। **(डॉ. रमन कक्कड़)**

मेरी कहानी, मेरी जुबानी

टी.बी. ? मुझे और टी.बी. ? महरौली टी.बी. अस्पताल के डॉक्टर की बात सुनकर मैं एकदम चकरा गई थी, आँखों के आगे अंधेरा छा गया। कानों में सन्नाटा छा गया और मुझे अपना अंत सामने नजर आ रहा था।

जीवन का पिछला सारा घटनाक्रम एक चलचित्र की भाँति मेरे दिमाग में चलने लगा। पहले पापा से बिछुड़ना, फिर मेरी माँ द्वारा मेरा भविश्य सुधारने के लिये मुझे कलकत्ता के अनाथ आश्रम में डालना, मुझे पढ़ाई की लगन लग जाना, इतनी कि अपनी सेहत और खान पान को लगातार नजरअंदाज करते रहना । मेरी सेहत एक साल से गिरती चली जा रही थी । फिर मैं अपनी मामी के पास दिल्ली आई तो उसने फौरन भाँप लिया मेरी बीमारी को । वो मेरा कान पकड़ कर सीधे मुझे अस्पताल में लाई थी । मुझे अपना जीवन बिल्कुल अस्त–व्यस्त नजर आ रहा था । मामी कब और कैसे मेरा हाथ थाम कर बसों और ऑटो के भीड़–भड़क्के में से होते हुए वापिस घर ले आई थी । मुझे होश नहीं था । बस मैं तो सारी रात रोती रही। टी.बी. ?

अगली सुबह महरौली वाला रैफर फार्म लेकर मेरी मामी मुझे फरीदाबाद के बी.के. अस्पताल में ले आई । डॉ0 रमन कक्कड़ ने मेरी सब रिर्पोटों पर एक नजर डाली और मेरे हाथ में एक ऐसा पुरस्कार थमा दिया कि जिसका मुझे जीवन में सबसे ज्यादा शौक था – पढ़ने के लिए दो पुस्तकें । वहीं पार्क में बैंच पर बैठकर अभी के अभी पढ़ने का आदेश दिया । ये मेरे जीवन का सबसे महत्वपूर्ण तोहफा था । किसी चमत्कार से कम नहीं था।

ज्यूँ–ज्यूँ मैं टी.बी. के बारे में लिखे गये शब्द वाक्य व अध्याय पढ़ती चली गई, मेरे आँसू सूखते चले गए। मन में आशा की किरण फिर जाग गई और मेरा मन निराशा के पाताल से निकलकर आशा के आसमान में उड़ चला।

डॉट्स की दवाईयों ने भी जादू सा काम करना शुरु कर दिया । मेरी मामी की प्यार भरी सेवा तथा पल्ला की टी.बी.एच.वी. शारदा मैडम जी के सहयोग से मैं कुछ ही महीनों में पूरी तरह से स्वस्थ हो गई और डॉ0 रमन कक्कड़ के बताए अनुसार दवाई जारी रखती रही ।

अगर भारत में टी.बी. जैसे शत्रुओं की भरमार है तो यहाँ मददगार फरिश्तों की भी कमी नहीं।